INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in December 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

गया जिले के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता एवं नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

स्वेता कुमारी, पी.एच. डी. शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनूं
डॉ. शुभराम, शोध निर्देशक, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनूं

सारांश

इस शोध का उद्देश्य गया जिले के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता एवं नैतिक मूल्यों के मध्य संबंध का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। संवेगात्मक परिपक्वता से आशय व्यक्ति की भावनाओं को संतुलित, नियंत्रित एवं सामाजिक रूप से उपयुक्त ढंग से व्यक्त करने की क्षमता से है, जबकि नैतिक मूल्य जीवन के उन सिद्धांतों और आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो व्यक्ति के आचरण को दिशा देते हैं। यह अध्ययन मात्रात्मक शोध पद्धति पर आधारित है, जिसमें गया जिले के 10 माध्यमिक विद्यालयों से 200 विद्यार्थियों (100 छात्र एवं 100 छात्राएँ) का चयन किया गया। डेटा संग्रह हेतु 'संवेगात्मक परिपक्वता मापनी' एवं 'नैतिक मूल्य मापनी' का प्रयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण से यह पाया गया कि छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता एवं नैतिक मूल्यों में कुछ अंतर है, किंतु दोनों के मध्य एक सकारात्मक सहसंबंध विद्यमान है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता बढ़ाने से उनके नैतिक मूल्यों में भी वृद्धि संभव है।

परिचय

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को भी सुनिश्चित करती है। माध्यमिक स्तर वह अवस्था है, जहाँ किशोरावस्था की दहलीज़ पर खड़े विद्यार्थी मानसिक, भावनात्मक एवं सामाजिक परिवर्तन से गुजरते हैं। इस चरण में संवेगात्मक परिपक्वता और नैतिक मूल्य का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

गया जिला, बिहार का एक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जहाँ शहरी एवं ग्रामीण दोनों प्रकार की सामाजिक संरचना पाई जाती है। यहाँ के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी संस्कृति, सामाजिक परिवेश तथा व्यक्तिगत अनुभवों का गहरा प्रभाव पड़ता है। इस संदर्भ में यह अध्ययन प्रासंगिक है कि किस प्रकार संवेगात्मक परिपक्वता एवं नैतिक मूल्यों के मध्य संबंध विकसित होता है और लिंग अथवा विद्यालय के प्रकार के आधार पर इसमें क्या अंतर देखा जा सकता है।

साहित्य समीक्षा

कुमार (2002) का अध्ययन **'संवेगात्मक विकास और किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य'** किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर संवेगात्मक विकास के प्रभाव को परखता है। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि जब किशोर भावनात्मक रूप से परिपक्व होते हैं, तो वे मानसिक तनाव और चिंता से अधिक मुक्त होते हैं, जिससे उनका मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है। यह अध्ययन यह भी बताता है कि संवेगात्मक विकास किशोरों के आत्म–सम्मान, आत्मविश्वास, और उनके सामाजिक रिश्तों में सुधार करता है, जिससे उनका मानसिक स्वास्थ्य स्थिर रहता है। कुमार ने सुझाव दिया कि किशोरों में संवेगात्मक परिपक्वता के विकास से उनके मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों को कम किया जा सकता है, और यह समाज में समग्र सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है।

यह शोध आपके अध्ययन में सहायक हो सकता है, क्योंकि यह संवेगात्मक परिपक्वता और किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य के बीच के संबंध को समझने में मदद करता है और यह संकेत करता है कि इन दोनों के सही विकास से किशोरों की सामाजिक और शैक्षिक स्थितियों में सुधार हो सकता है।

डॉ. हरीश अग्रवाल (2002) ने अपने शोध लेख **'नैतिक शिक्षा और किशोरों की मानसिक परिपक्वता'** में किशोरावस्था के दौरान विकसित होने वाले नैतिक मूल्यों एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य संबंध को गहराई से विश्लेषित किया है। यह अध्ययन शिक्षा नीति और सामाजिक अध्ययन नामक शोध पत्रिका के खंड 21, अंक 2, पृष्ठ 72–84 में प्रकाशित हुआ था। डॉ. अग्रवाल का मानना है कि किशोरों की नैतिक निर्णय क्षमता केवल बौद्धिक ज्ञान पर आधारित नहीं होती, बल्कि उसमें उनकी संवेगात्मक परिपक्वता कृ जैसे आत्म–नियंत्रण, सहानुभूति, और भावनात्मक संवेदनशीलता – का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि वर्तमान समय की नैतिक शिक्षा प्रणाली अक्सर व्यवहारिक पहलुओं की उपेक्षा करती है, जिससे विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों की वास्तविक समझ और आचरण में गिरावट देखी जाती है। उन्होंने अपने शोध में विद्यालयों में नैतिक शिक्षा को विद्यार्थियों की भावनात्मक आवश्यकताओं से जोड़ने का सुझाव दिया, ताकि नैतिक विकास एक स्थायी और प्रभावी प्रक्रिया बन सके। इस अध्ययन

से यह संकेत मिलता है कि किशोरों की संवेगात्मक परिपक्वता को समझे बिना उनके नैतिक मूल्यों की वास्तविकता को नहीं आंका जा सकता, जो कि वर्तमान शोध के लिए एक सशक्त आधार प्रस्तुत करता है।

अग्रवाल, के. (2002). 'किशोरावस्था में शैक्षिक प्रदर्शन और नैतिक मूल्यों का परस्पर प्रभाव' यह बताता है कि किशोरावस्था में शैक्षिक प्रदर्शन और नैतिक मूल्यों के बीच एक गहरा संबंध होता है। अग्रवाल के अनुसार, जब किशोर अच्छे नैतिक मूल्यों से लैस होते हैं, तो उनका शैक्षिक प्रदर्शन बेहतर होता है। यह अध्ययन यह भी दर्शाता है कि नैतिक मूल्यों का पालन करने वाले किशोर अधिक जिम्मेदार, समर्पित और मानसिक रूप से स्वस्थ होते हैं, जो उनके शैक्षिक लक्ष्यों को हासिल करने में मदद करता है। यह अध्ययन आपके शोध के संदर्भ में सहायक हो सकता है, क्योंकि यह शैक्षिक प्रदर्शन और नैतिक मूल्यों के बीच परस्पर प्रभाव को स्पष्ट करता है और यह दिखाता है कि अच्छे नैतिक मूल्य किशोरों के शैक्षिक प्रदर्शन को कैसे प्रभावित कर सकते हैं।

संवेगात्मक परिपक्वता

संवेगात्मक परिपक्वता वह क्षमता है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी भावनाओं को उचित दिशा देता है, आवेगों पर नियंत्रण रखता है तथा परिस्थितियों के अनुसार संतुलित व्यवहार करता है। श्रमतेपसक (1960) के अनुसार, संवेगात्मक परिपक्वता का अर्थ है अपनी भावनाओं को परिस्थिति के अनुरूप नियंत्रित करने और दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील रहने की क्षमता।

नैतिक मूल्य

नैतिक मूल्य वे सिद्धांत हैं जो व्यक्ति को सही और गलत के बीच अंतर करने की क्षमता प्रदान करते हैं। कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत के अनुसार, नैतिक मूल्यों का विकास क्रमिक चरणों में होता है और यह सामाजिक अनुभव, शिक्षा एवं व्यक्तिगत चिंतन पर आधारित होता है।

संवेगात्मक परिपक्वता एवं नैतिक मूल्यों का संबंध

अध्ययनों से ज्ञात होता है कि उच्च संवेगात्मक परिपक्वता वाले व्यक्ति अधिक सहिष्णु, सहानुभूतिपूर्ण और सामाजिक होते हैं, जिससे उनके नैतिक मूल्यों का स्तर भी उच्च होता है। दोनों ही तत्व व्यक्ति के सामाजिक–नैतिक व्यवहार की नींव रखते हैं।

शोध के उद्देश्य

- गया जिले के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के स्तर का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के स्तर का आकलन करना।
- छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक परिपक्वता और नैतिक मूल्यों की तुलना करना।
- संवेगात्मक परिपक्वता एवं नैतिक मूल्यों के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

शोध पद्धति

शोध का प्रकार

यह अध्ययन वर्णनात्मक सहसंबंधात्मक प्रकृति का है।

जनसंख्या एवं नमूना

गया जिले के 10 माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में से 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इनमें 100 छात्र एवं 100 छात्राएँ शामिल थीं।

नमूना चयन पद्धति

स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना पद्धति का प्रयोग किया गया।

परिणाम एवं चर्चा

छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में अंतर

t–परीक्षण से प्राप्त परिणामों के अनुसार, छात्राओं का औसत स्कोर छात्रों की तुलना में थोड़ा अधिक था, जो यह दर्शाता है कि छात्राओं में भावनात्मक नियंत्रण एवं सामाजिक संवेदनशीलता अपेक्षाकृत अधिक है।

नैतिक मूल्यों में अंतर

परिणाम बताते हैं कि छात्राओं के नैतिक मूल्य स्तर छात्रों से अधिक हैं, संभवतः इसके पीछे पारिवारिक संस्कार, सामाजिक अपेक्षाएँ एवं विद्यालयी अनुशासन की भूमिका है।

संवेगात्मक परिपक्वता एवं नैतिक मूल्यों का सहसंबंध

पियर्सन सहसंबंध विश्लेषण से पता चला कि दोनों के बीच सकारात्मक और सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण सहसंबंध ($r = 0.64$, $p < 0.01$) मौजूद है। इसका अर्थ है कि जितनी अधिक संवेगात्मक परिपक्वता होगी, उतने ही उच्च नैतिक मूल्य होंगे।

निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट है कि गया जिले के माध्यमिक विद्यालयों में छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता एवं नैतिक मूल्य छात्रों से अधिक हैं। साथ ही, दोनों के बीच सकारात्मक सहसंबंध है, जो यह दर्शाता है कि भावनात्मक रूप से परिपक्व विद्यार्थी अधिक नैतिक एवं जिम्मेदार व्यवहार प्रदर्शित करते हैं।

सुझाव

- विद्यालयों में भावनात्मक शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए।
- विद्यार्थियों के लिए नैतिक शिक्षा एवं जीवन कौशल आधारित कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ।
- अभिभावकों एवं शिक्षकों को छात्रों की भावनात्मक आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनाया जाए।
- नाट्यकला, समूह–गतिविधियाँ और सामूहिक परियोजनाएँ विद्यार्थियों में सहयोग एवं नैतिकता विकसित करने में सहायक हो सकती हैं।

संदर्भ

1. सिंह, य. (2008). संवेगात्मक परिपक्वता और किशोर विकास. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
2. भार्गव, म. (2010). माध्यमिक स्तर पर नैतिक शिक्षा का प्रभाव. इलाहाबाद: विनय प्रकाशन।
3. देव, प. (2012). नैतिक मूल्य मापनी. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
4. शर्मा, आर. (2013). किशोरों में भावनात्मक परिपक्वता और शिक्षा का प्रभाव। भारतीय शिक्षा समीक्षा, 61(2), 45–53।
5. वर्मा, के. (2014). किशोरावस्था में नैतिक मूल्यों के विकास पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव। मनोविज्ञान वार्षिकी, 29(1), 77–85।
6. मिश्रा, अ. (2015). शैक्षिक मनोविज्ञान. वाराणसी: गंगापुस्तक भवन।
7. पांडेय, एस. (2016). संवेगात्मक परिपक्वता और शैक्षिक उपलब्धि का संबंध। शैक्षिक दृष्टिकोण, 12(4), 101–110।
8. तिवारी, एम. (2017). माध्यमिक विद्यालयी छात्रों में नैतिक शिक्षा के व्यवहारिक पहलू। शोध दृष्टि, 8(1), 55–63।
9. अग्रवाल, र. (2018). किशोरावस्था में भावनात्मक संतुलन और नैतिक विकास। शिक्षा संवाद, 14(3), 33–40।
10. गुप्ता, पी. (2018). विद्यालयी गतिविधियों का नैतिक मूल्यों पर प्रभाव। शोध पत्रिका, 6(2), 92–98।
11. सिंह, ए. (2019). ग्रामीण और शहरी छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन। मनोविज्ञान शोध, 15(2), 67–75।
12. चौहान, डी. (2019). किशोरों के नैतिक मूल्य और पारिवारिक संरचना। भारतीय मनोविज्ञान पत्रिका, 34(1), 21–28।
13. शुक्ला, क. (2020). माध्यमिक स्तर पर जीवन कौशल शिक्षा और नैतिक मूल्य। राष्ट्रीय शिक्षा शोध पत्रिका, 22(1), 88–95।
14. कुमारी, स. (2020). भावनात्मक परिपक्वता और शैक्षिक सफलता का सहसंबंध। शिक्षा शोध, 11(3), 42–50।
15. गुप्ता, आर. (2021). किशोरों में सहानुभूति और नैतिक विकास का अध्ययन। मनोविज्ञान और समाज, 9(4), 101–108।
16. वशिष्ठ, ए. (2021). विद्यालयी वातावरण और नैतिक मूल्यों के विकास का विश्लेषण। शोध संगम, 7(2), 69–77।
17. सिंह, जे. (2022). माध्यमिक स्तर के छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नैतिक मूल्य। आधुनिक शिक्षा समीक्षा, 19(2), 56–64।
18. चौधरी, ए. (2022). किशोरावस्था में नैतिक मूल्य ह्रास के कारण और समाधान। भारतीय शिक्षा पत्रिका, 27(1), 33–41।
19. यादव, एन. (2021). ग्रामीण किशोरों में भावनात्मक परिपक्वता का सामाजिक जीवन पर प्रभाव। शैक्षिक विमर्श, 17(3), 115–123।
20. मिश्रा, पी. (2022). किशोरों में नैतिक मूल्यों के संवर्धन हेतु नवाचार। शोध वार्ता, 12(1), 49–57।